गुरुमाई चिद्विलासानन्द पर मनन, वर्ष २०१६

हर्षा भगवान

द्वारा लिखित

नृत्य : एक अर्चना

पाँच से पन्द्रह वर्ष की उम्र के बीच, मैं भरतनाट्यम् की एक निष्ठावान छात्रा थी। भरतनाट्यम् दक्षिण भारत का एक शास्त्रीय नृत्य है जो मूलतः मन्दिरों में पूजा के रूप में किया जाता था।

बचपन में जब मैं नृत्य करती तो अक्सर घुँघरू पहनती और नृत्य के ताल पर बजते घुँघरुओं की आवाज़ मुझे बहुत अच्छी लगती थी। जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई, भरतनाट्यम् मेरे सिद्धयोग अभ्यासों में जुड़ गया, जिन्हें मैं घर पर अपने परिवार के साथ और वॅनकूवर के सिद्धयोग ध्यान केन्द्र पर किया करती थी। उन वर्षों के दौरान मैं जब नृत्य करती, तो मुझे गहरी भक्ति और अन्तरात्मा के साथ जुड़ाव की अनुभूति होती। नृत्य के समय भाव-भंगिमाएँ बनाते समय मैं यह कल्पना करती कि मैं इन्हें श्री गुरुमाई को अर्पित कर रही हूँ। ऐसे क्षणों में मैं स्वयं को भगवान के, श्रीगुरु के व स्वयं अपने हृदय के बहुत समीप पाती।

नृत्य-प्रशिक्षण पूरा होने पर, मैंने अपना ध्यान शैक्षिक विषयों की ओर मोड़ा और अन्ततः विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर मैं एक सॉफ्टवेयर इन्जीनियर बन गई। हालाँकि कुछ अवसरों पर, अब भी मैं नृत्य करती रही, लेकिन अब भरतनाट्यम् मेरे जीवन का केन्द्र नहीं रह गया था।

सन् २०१३ की गर्मियों में, विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद मैं अपनी एक ललक को पूर्ण कर पाई जो बचपन से मेरे अन्दर थी; वह थी : एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन के कार्यों में अपना योगदान अर्पित कर, गुरुमाई जी के मिशन की सेवा करना। मैंने एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग में पूर्णकालिक सेवा अर्पित करना आरम्भ कर दिया।

श्री मुक्तानन्द आश्रम आने के बाद, जब भी मुझे अवसर मिलता मैं 'अनुग्रह' नामक भवन के प्रवेश द्वार पर स्थित शिव नटराज की मूर्ति के समक्ष नृत्य-नमस्कार अर्पित करती। नृत्य-नमस्कार में नर्तक सर्वप्रथम उस धरती से अनुमति व आशीर्वाद माँगते हैं जिस पर वे नृत्य कर रहे हैं और अपना नृत्य अपने आराध्य देव को अर्पित करते हैं। ऐसे क्षणों में मुझे उत्कट ललक महसूस होती अन्तर-दिव्यता की अनुभूति करने की, वही भाव जिसे मैं बचपन में भरतनाट्यम् करते समय महसूस करती थी। ऐसा लगता मानो मैं मन ही मन गुरुमाई जी से बात कर रही हूँ और बचपन के अपने अनुभवों को फ़िर से

महसूस करने की अपनी उत्कंठा के बारे में उन्हें बता रही हूँ।

अगस्त माह की एक सुबह, मैंने गुरुमाई जी को निधि चौक में खड़े हुए देखा; वे श्री निलय सत्संग-हॉल में जा रहीं थीं। वे कुछ विज़िटिंग सेवाकर्ताओं से बात कर रहीं थीं। जैसे ही मैं उनका अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ी, गुरुमाई जी ने बड़ी ही प्रेमल मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा, मानो वे कह रहीं हों, "अरे, तुम यहाँ हो। मैं कब से तुम्हें ढूँढ़ रही थी।" उन्होंने अपनी जेब से पायल की एक जोड़ी निकालकर मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"तुम पायल पहनती हो न?" उन्होंने पूछा।

मैंने सिर हिलाते हुए कहा, "जी हाँ।"

"यदि मैं तुम्हें ये दूँ, तो क्या तुम इन्हें पहनोगी?"

"हाँ!" मैंने खुशी से उछलते हुए कहा।

गुरुमाई जी ने वे पायल मेरे हाथों में रख दीं। वे चाँदी की थीं और हर पायल में तीन छोटे-छोटे घुँघरू लगे थे; मैंने उसी समय झुककर वे पायल पहन लीं।

अपने पैरों में उन घुँघरुओं की खनक से, मैं फिर से नृत्य करने के लिए प्रेरित हो गई। मैं, अपनी दिनचर्या में भरतनाट्यम् की कठिन भाव-भंगिमाओं का अभ्यास करने के लिए समय निकालने लगी। नृत्य के माध्यम से, अपने हृदय के साथ मैं जिस जुड़ाव का अनुभव करती थी, वह पुनः जग गया। अगले जून में मुझे श्री गुरुमाई के जन्मदिवस के सम्मान में आयोजित जन्मदिवस आनन्दोत्सव-अनुकम्पा में एक नृत्य समूह में शामिल होकर सेवा अर्पित करने के लिए आमन्त्रित किया गया। एक दिन जब हम अनुग्रह में स्थित गणेश जी की मूर्ति के पास वाले लॉन में महोत्सव की तैयारी हेतु पूर्वाभ्यास कर रहे थे तब श्री गुरुमाई वहाँ आइ-

गुरुमाई जी ने मुझसे कहा, "तुम्हें भरतनाट्यम् आता है। हमें दिखाओ"। मैंने एक तेज़ गति से, तालबद्ध, तकनीकी भंगिमा वाला नृत्य करना आरम्भ कर दिया। तुरन्त गुरुमाई जी ने मुझे रुकने का संकेत किया व मृदुलता से कहा, "मुद्राओं वाला", जिसका भरतनाट्यम् में अर्थ होता है "जो अधिक भक्तिपूर्ण हो।" उस क्षण मुझे भगवान गणेश की एक स्तुति याद आ गई जिस पर मैं नृत्य किया करती थी, और मैंने उसे अपने भावों द्वारा प्रदर्शित करना आरम्भ कर दिया।

श्री गुरुमाई के सम्मुख नृत्य करते हुए मैंने पाया कि मुद्राएँ मेरे अन्दर से स्वतः ही प्रकट हो रही थीं। मुझे महसूस हो रहा था कि मैं अपनी पूर्ण सत्ता के साथ उन्हें भेंट अर्पित कर रही हूँ —वैसे ही जैसे मैं अपने बचपन में कई बार कल्पना किया करती थी। मैं विशुद्ध अर्पण की मुक्त अवस्था में वापस आ गई थी और नृत्य के माध्यम से पूजा-अर्चना के आनन्द में पूर्णतया सराबोर हो गई थी।

बाद में मैंने वही नृत्य भगवान गणेश की मूर्ति के सामने अर्पित किया जो कि जन्मदिवस आनन्दोत्सव — अनुकम्पा वीडिओ के द्वितीय अध्याय का एक भाग था। कई लोगों ने बताया कि जब उन्होंने वेबसाइट पर वह नृत्य देखा तो उन्होंने महसूस किया कि पूजा-अर्चना का यह कृत्य उनकी ओर से किया जा रहा है।

जब से श्री गुरुमाई ने मुझे ये पायल दीं हैं, मैं हमेशा उन्हें पहने रहती हूँ। ये पायल मुझे याद दिलाती हैं, कि मैं जो भी करूँ, दिल से करूँ। जिस प्रकार मैं नृत्य करते हुए वर्तमान क्षण में निमग्न हो जाती हूँ, उसी प्रकार मैं अपने सभी कृत्यों को इस समझ के साथ कर सकती हूँ कि वे विशुद्ध अर्पण हैं। इसी समझ के साथ, मैं अपने अन्तर के आनन्दपूर्ण स्थान व पूजा-भाव के साथ जुड़ी रह सकती हूँ। मैं गुरुमाई जी के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे पूजा-भाव से नृत्य करने में जो शक्ति है, उससे पुनः जोड़ दिया है; ऐसा नृत्य मुझे अपने ही आत्मानन्द के सम्पर्क में लाता है।

©२०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।